# I

## प्राक्कथन

"अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में प्रगतिशीलता" विषय पर एम्. फिल करने के दौरान मुझे तत्कालीन प्रकाशित उनके समग्र कथा-साहित्य को पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ । जिनकी रचनाओं में विशेषकर मुस्लिम सम्प्रदाय के मध्य-वर्गीय एवं मजदूर-जीवन की कथा-व्यथा, संघर्ष और उनकी सम्पूर्ण संस्कृति को रेखांकित किया गया है । रचनाकार अपने साहित्य में किसी न किसी रूप में विद्यमान होता है जिसके माध्यम से हमें उसके जीवन-दर्शन एवं उसकी रचना-दृष्टि का पता चलता है ।

अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास "समर शेष है" , "जहरबाद" , "दंतकथा" , "झीनी-झीनी बीनी चदरिया" , और "टूटा हुआ पंख" , "कितने कितने सवाल" अब्दुल बिस्मिल्लाह की विशिष्ट कहानियाँ , रैन-बसेरा , अतिथि देवो भव , जीनिया के फूल आदि संग्रहों को पढ़ने से मुझे लगा कि इनके साहित्य में अपने परिवेश की माटी की महक सर्वत्र विद्यमान है । कतिपय समीक्षकों ने इन्हें मुंशी प्रेमचन्द , नागार्जुन , फणीश्वर नाथ रेणु आदि प्रगतिशील रचनाकारों की अगली कड़ी का सशक्त हस्ताक्षर भी माना है ।

इस तरह अब्दुल बिस्मिल्लाह के साहित्य ने मुझे अन्दर से झंकृत किया और मैं ने सोचा कि एम्. फिल के बाद मैं इनके कथा-साहित्य पर शोध कार्य करूँ । ऐसा सुयोग था कि इसी दौरान हिन्दी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय में अब्दुल बिस्मिल्लाह से मिलने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ । जिनके सद्व्यवहार , सादगी एवं ज्ञान ने मुझे और भी प्रेरित किया ।

इसका परिणाम यह रहा कि मैं ने "अब्दुल बिस्मिल्लाह और उनके कथा-साहित्य की रचना दृष्टि का अनुशीलन" विषय पर शोध कार्य करना शुरू कर दिया । कालान्तर में कतिपय कारणों से मैं ने उपर्युक्त विषय में परिवर्तन कर " कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह की रचना दृष्टि" विषय का चयन किया और इसके अनुरूप शोध-प्रबंध की रूपरेखा भी तैयार की जिसमें कुल सात अध्याय निर्धारित किये गये ।

§1§ प्रथम अध्याय :- "अब्दुल बिस्मिल्लाह : जीवन वृत्त एवं साहित्यिक व्यक्तित्व ।"

§2§ दूसरा अध्याय:- "अब्दुल बिस्मिल्लाह की रचना-यात्रा एक विहंगावलोकन ।"

§3§ तीसरा अध्याय:- "अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य में प्रगतिशील दृष्टि ।"

§4§ चौथा अध्याय :- "अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य में राजनीतिक चेतना ।"

§5§ पाँचवा अध्याय:- "अब्दुल बिस्मिल्लाह के साहित्य में सांस्कृतिक भावबोध ।"

§6§ छठाँ अध्याय :- अब्दुल बिस्मिल्लाह की रचनागत शिल्प दृष्टि ।"

§7§ सातवाँ अध्याय :- उपसंहार ।

प्रथम अध्याय - अब्दुल बिस्मिल्लाह : जीवन वृत्त एवं साहित्यिक व्यक्तित्व" में मैं ने अब्दुल बिस्मिल्लाह के जीवन एवं कार्यक्षेत्र के विभिन्न पहलुओं को रेखांकित करने का प्रयास किया है । इसके अन्तर्गत उनके आंतरिक

व्यक्तित्व के उन बिन्दुओं को छूने की कोशिश की , गई है जिसके माध्यम से हमें उनके भाव-बोधों और जीवन-दृष्टि का पता चल सकें ।

"अब्दुल बिस्मिल्लाह की रचना-यात्रा एक विहंगावलोकन" के दूसरे अध्याय में मैंने बहुआयामी प्रतिभा के धनी लेखक की कविता , कहानी , नाटक और उपन्यास आदि सभी विधाओं पर लिखी गई रचनाओं की चर्चा की है । शोध के केन्द्र में कथा-साहित्य होने के कारण मैं ने अन्य कृतियों पर मात्र एक विहंगम दृष्टि डाली है परन्तु उपन्यास एवं कहानियों के अन्तर्वस्तु को विशेष रूप से रेखांकित करने का प्रयास किया गया है । अब्दुल बिस्मिल्लाह की रचनाओं से गुजरते हुए मुझे उनकी रचना-दृष्टि को परखने का भरपूर अवसर मिला । जिसका उल्लेख मैं ने अगले अध्यायों में यथाशक्ति किया है ।

तीसरे अध्याय - अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य में प्रगतिशील दृष्टि की तलाश करने के पूर्व मैं ने पहले ही कहा है कि कतिपय विद्वानों ने इन्हें प्रगतिशील रचनाकारों की कड़ी का सशक्त हस्ताक्षर माना है । इसलिए मैं ने उनकी प्रगतिशील दृष्टि को उनके कथा-साहित्य में ढूँढने का प्रयास किया है । प्रगतिवाद और प्रगतिशील विचारधारा के विषय में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं इसीलिए मैंने सबसे पहले दोनों की परिभाषा एवं उनके पार्थक्य को समझने की कोशिश की है । इस संबंध में कई आलोचकों के विचार भी प्रस्तुत किये गये हैं । इसके साथ ही समाजवाद , यथार्थवाद , अतियथार्थवाद, को भी परिभाषित करते हुए आलोच्य कथा-साहित्य में मैंने प्रगतिशीलता के उन बिन्दुओं की खोज की है जो कि हमारे समाज में प्रासंगिक है । उदाहरण स्वरूप वर्ग-विभेद, धार्मिक सहिष्णुता , क्रांतिधर्मिता , पक्षधरता आदि बिन्दुओं को लेखक की विभिन्न रचनाओं द्वारा विश्लेषित कर उनकी प्रगतिशील रचना दृष्टि को जानने और समझने का प्रयास किया गया है ।

अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा-साहित्य में राजनीतिक चेतना के चौथे अध्याय में रचनाकार के कथा-साहित्य में राजनीतिक दृष्टि को तलाशने के पूर्व मैं ने साठोत्तरी राजनीतिक परिदृश्य के अंतर्गत अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय परिवेश की चर्चा की है । सन् साठ के बाद की राजनीति ने सम्पूर्ण मानवता एवं साहित्य को झकझोर कर रखा दिया है । राजनीति के प्रभाव के कारण जीवनमूल्यों में काफी बदलाव आया और मोहभंग की प्रक्रिया शुरू हुई जिसके तहत् भ्रष्टाचार , भाई-भतीजावाद , भाषावाद , प्रांतवाद एवं सम्प्रदायवाद आदि का जन्म हुआ जिसका स्वरूप आज भी विद्यमान है ।

प्रस्तुत अध्याय में मैंने उपर्युक्त सभी बातों का उल्लेख उनके साहित्य के माध्यम से करने का प्रयास किया है ।

अब्दुल बिस्मिल्लाह के साहित्य में सांस्कृतिक भावबोध के अंतर्गत मैंने संस्कृति की अवधारणा के सम्बन्ध में कतिपय महत्वपूर्ण विद्वानों एवं रचनाकारों के विचारों को प्रस्तुत किया है । अब्दुल बिस्मिल्लाह मूलत: मुस्लिम संस्कृति के चितेरे हैं इसलिए उनके समग्र कथा-साहित्य में मुस्लिम संस्कृति विविध रूपों में चित्रित हुई है । इसका स्वरूप हमें उनके कथा-साहित्य के मुस्लिम-समाज में व्याप्त धर्म , जाति , तलाक , बहुविवाह आदि अनेक सामाजिक एवं धार्मिक बातों में देखने को मिलता है । इसके अतिरिक्त लेखक ने जगह-जगह पर हिन्दू , ईसाई , एवं अन्य जातियों की संस्कृतियों का समक्ष विवेचन किया है जिसमें उनके परिवेश की भोली-भाली ग्रामीण संस्कृति अपने अभाव एवं संघर्ष के साथ व्यक्त हुई है ।

अब्दुल बिस्मिल्लाह की रचनागत शिल्प दृष्टि के अन्तर्गत मैं ने लेखक की भाषिक क्षमता एवं उनके द्वारा प्रयुक्त विविध शैलियों का अध्ययन किया है ।

इनकी भाषा में अपने परिवेश की गहरी पकड़ है और साथ ही वह देश, काल, वातावरण और पात्रों के अनुकूल है। अधिकांश कथा-साहित्य में मुस्लिम समाज के विविध वर्गों के जीवन-संघर्ष को दर्शाया गया है, इसलिए उस समाज की भाषा एवं बोल-चाल के शब्द सर्वत्र विद्यमान है। लेखक ने अपने भावों को व्यक्त करने के लिए विविध शैलियों का प्रयोग किया है। "झीनी-झीनी बीनी चदरिया" में प्रयुक्त रूपक इनकी नूतन शैली का अद्भुत उदाहरण है। आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया दंतकथा उपन्यास लेखक की अनूठी शैली है। जिसमें वह मुर्गे के माध्यम से शोषित मानव की कहानी कहलवाता है। इसके साथ ही अब्दुल बिस्मिल्लाह ने भाषा और विषयवस्तु को जीवन्त बनाने के लिए जगह-जगह पर अलंकार, बिम्बों, मुहावरों और कहावतों का प्रयोग किया है। इनकी भाषागत-दृष्टि विषयवस्तु के अनुरूप है।

उपसंहार के अंतर्गत मैं ने अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों एवं कहानियों में अभिव्यक्त उनकी वैचारिक दृष्टि को स्थान दिया है, जिनको कि आधार बनाकर मैं ने विभिन्न अध्यायों का मूल्यांकन किया है, जिससे कि इनकी सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं भाषा संबंधी दृष्टिकोण को उजागर किया गया है।

इस प्रकार हमारी शोध-प्रबंध की सीमा में यह एक विनम्र प्रयास है। इस प्रस्तुति में जिन लोगों का सहयोग एवं मार्गदर्शन मिला है उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना एक औपचारिकता है, पर इसके सिवा और मार्ग ही क्या है कि मैं अपने मन की भावनाओं को कैसे व्यक्त करता। जिन्होंने कि मुझे इस दुरूह कार्य में संबल प्रदान किया।

सर्वप्रथम मैं गुरुवर डॉ. बी. डी. मिश्र ( भूतपूर्व प्रोफेसर , हिन्दी विभाग , गोवा विश्वविद्यालय) के प्रति आभारी हूँ , क्योंकि इनके ही स्नेह और प्रेरणा द्वारा मैं शोध कार्य के प्रति प्रवृत्त हुई ।

लेकिन इसे सही अंजाम सम्प्रति अध्यक्ष हिन्दी विभाग , गोवा विश्वविद्यालय एवं मेरे गुरू डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र ने दिया । क्योंकि इनके अथक परिश्रम , कुशल निर्देशन एवं उचित मार्गदर्शन से ही मैं इस कठिन कार्य को करने में समर्थ हो सकी । इनके प्रति मैं हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ ।

शोध कार्य के प्रारंभ से लेकर समाप्ति तक मैं पूज्यवर डॉ. आदित्य प्रसाद त्रिपाठी ( भूतपूर्व अध्यक्ष , हिन्दी विभाग , सेंट जेवियर्स कालेज , मापसा) की स्नेह एवं प्रेरणमयी झीनी-झीनी फुहार से अविरत भीगती रही । आपके प्रति मैं विनम्र शब्दों में आभार व्यक्त करती हूँ ।

इस कार्य के दौरान हिन्दी विभाग के डॉ. बालकृष्ण शर्मा रोहिताश्व, डॉ. श्रीमती इशरत खान , श्रीमती वृषाली मांद्रेकर , डॉ. रवीन्द्र मिश्र , कनिष्ठ लिपिक श्री यशवन्त नाईक , श्रीमती प्रार्थना नाईक , एवं अन्य का स्नेह एवं सहयोग बराबर मिलता रहा । जिनके प्रति मैं आभारी हूँ ।

गोवा विश्वविद्यालय के कुलगुरू प्रो. बी. एस. सोंदे, कुलसचिव डी. वी. बोरकर , उपकुल सचिव श्री एम्. ए. वैद्य एवं उनके सहयोगियों का सहयोग समय-समय पर मिलता रहा । जिनके प्रति मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ ।

इसके अतिरिक्त पुस्तकालयाध्यक्ष श्री विठ्ठल रघुवीर नावेलकर एवं पुस्तकालय में कार्यरत अन्य कर्मचारियों को भी मैं साधुवाद देती हूँ जिन्होंने कि शोध सामग्री उपलब्ध कराने में मेरी भरपूर मदद की ।

भाषा संकाय के भूतपूर्व डीन प्रो. अशोक जोशी एवं सम्प्रति डीन प्रो. ओलविज्यु गोमिश के प्रति मैं शुक्रिया व्यक्त करती हूँ जिन्होंने कि मुझे इस कार्य में सहयोग प्रदान किया ।

भूतपूर्व प्राचार्या (जनपदीय शैक्षणिक प्रशिक्षण संस्थान आल्त परवरी-गोवा) तथा सम्प्रति शिक्षा निदेशिका श्रीमती सुमन पेडणेकर के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने समय-समय पर सहयोग देकर हमारा उत्साह वर्धन किया ।

श्री श्रीकांत कुलकर्णी, धारवाड के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, क्योंकि इन्होंने बहुत कम समय में ही कठोर परिश्रम कर, शोध प्रबंध की टंकण क्रिया को सम्पन्न किया ।

शोध कार्य की यह मंजिल शायद अधूरी रह जाती यदि मुझे अपने पति श्री गजानन बाळे एवं सुपुत्री अपर्णा का पारिवारिक स्नेह एवं प्रेरणा न प्राप्त होती ।

अंत में मैं उन सभी ज्ञात-अज्ञात लोगों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने कि इस मंजिल तक पहुँचने में हमारी मदद की ।

....